शंकराचार्य और उनके विचार :

शंकराचार्य का जन्म केरल के कलादी ग्राम में शिवगुरु आर्याम्बा नामक दम्पत्ति के कुटुम्ब में 788 ई. में हुआ था. इनकी इहलीला 32 वर्ष की आयु में समाप्त हो गई. उन्होंने सम्पूर्ण भारत की यात्रा की और विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया. उन्होंने देश की चारों दिशाओं में चार पीठें स्थापित कीं.

प्रमुख चारों पीठें

1. *ज्योतिषपीठ – बद्रीनाथ*
2. *गोवर्धनपीठ – जगन्नाथपुरी*
3. *शारदापीठ – द्वारिकापुरी*
4. *श्रंगेरीपीठ – दक्षिण में तुंगभद्रा नदी के तट पर*

दार्शनिक विचार

अद्वैतवाद का प्रतिपादक शंकराचार्य को माना जाता है, लेकिन शंकराचार्य के दादा गुरु श्री गौड़पादाचार्य ने 'माडूक्यकारिका' में अद्वैतवाद की भूमिका का प्रतिपादन किया. शंकराचार्य के अद्वैतवाद की मान्यताएं निम्न-लिखित हैं–

अद्वैतवाद में ब्रह्म को परम सत्ता माना गया है और प्राणी का उद्देश्य उस परम ब्रह्म की सत्ता का दर्शन करना है. सारा जगत् ब्रह्ममय है और ब्रह्म सत्, चित, आनन्द स्वरूप है. अद्वैतवाद जगत् की व्यावहारिक सत्ता को स्वीकार करता है. ज्ञान होते ही परमानंद की प्राप्ति होती है. अद्वैतवाद के अनुसार परमतत्व इंद्रियों के क्षेत्र के बाहर है. शंकराचार्य ने इंद्रियजन्य ज्ञान के लिए साधन चतुष्टय की आवश्यकता बताई है. साधन चतुष्टय में विवेक, वैराग्य, षडसम्मति और मुमुक्षत्व का समावेश रहता है. सतत् साधनारत् जिज्ञासु ब्रह्मनिष्ठ गुरु के चरणों में बैठकर ही ब्रह्म के साथ-साथ प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर पाता है. यही परविद्या और सत्य ज्ञान है.

ब्रह्म ही सत्य, निर्गुण, निराकार तथा अकर्ता है. इस जगत् के मूल में ब्रह्म ही विद्यमान है. वह सर्वव्यापी है और सभी प्राणियों में बसा है, जगत् का संचालक है. ब्रह्म अनादि अनंत और आनंदमय है.

शंकराचार्य ने माया से प्रतिबिम्बित ब्रह्म-स्वरूप को ईश्वर माना है. सृष्टि की सूक्ष्म क्रियावस्था में ही ईश्वर हिरण्य गर्भ रूप में परिणत होता है और स्थूल जगत् की रचना करने से विराट रूप में परिणत हो जाता है. शंकराचार्य ने जीव को ब्रह्म से अभिन्न माना है.

Scanned with CamScanner

शंकराचार्य के अनुसार माया के अर्थ

1. माया परम कारण भूत ब्रह्म से जगत् की रचना विधि है.
2. माया जगत् की स्वप्नरूप व्यावहारिक सत्ता है.
3. माया जगत् का ब्रह्म से अटूट सम्बन्ध है.
4. माया सत्य नहीं है, क्योंकि यह ज्ञान उत्पन्न होने पर लुप्त हो जाती है.
5. माया विलक्षण है और सभी पर व्यापती है.
6. जीव और ब्रह्म का भेद माया के कारण ही है.

अज्ञान के कारण जगत् सत्य की भाँति प्रतीत होता है. ब्रह्म ज्ञान होने से भ्रम का नाश होता है.

सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में शंकराचार्य ने आकाश को सर्वप्रथम उत्पत्ति बताया है. आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है. इसके नाश का क्रम इसका ठीक उलटा है.

शंकराचार्य द्वारा बताए गए मोक्ष-प्राप्ति के चार साधन

1. नित्य-अनित्य पदार्थों का बोध होना चाहिए.
2. समस्त भोगों की इच्छाओं से विरत होना चाहिए.
3. मन तथा इन्द्रियों पर नियंत्रण के साथ-साथ वेदांत में श्रद्धा रखनी चाहिए.
4. निषिद्ध कार्यों से विरत रहना चाहिए.

Scanned with CamScanner